विचार बिन्दु

अकेलापन कई बार अपने आप से सार्थक बातें करता है। वैसी सार्थकता भीड़ में या भीड़ के चिंतन में नहीं मिलती। –राजेंद्र अवस्थी

राजस्थान की लोकभाषा से भाषा निर्माण में कहावतों की भूमिका

राजस्थानी भाषा और संस्कृति का गहरा संबंध लोक–जीवन से है। प्राचीन काल में राजस्थान की बोलियां जैसे मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूंढाड़ी और शेखावाटी जैसी स्थानीय बोलियां ही थीं, जो जनमानस की दैनिक जिन्दगी, संघर्षों और विजय गाथाओं को व्यक्त करती रहीं। ये बोलियां धीरे–धीरे परस्पर मेल–जोल से एक समृद्ध भाषा के रूप में विकसित हुईं। इस विकास प्रक्रिया में कहावतें, मुहावरे, उपमाएं और लोकोक्तियां महत्वपूर्ण सहायक बनीं। ये लोक–उक्तियां न केवल भाषा को मजबूत बनाती हैं, बल्कि सामाजिक मूल्यों, नैतिकता और पर्यावरणीय ज्ञान को पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित करती हैं। राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में जहां पानी की एक–एक बूंद कीमती थी, वहां की कहावतें जैसे “नाक से मत ललकार, कटेगी तो निकलेगी खाक से” ने भाषा को व्यावहारिक बनाया। ये उक्तियां पहले मौखिक परंपरा से चलीं, फिर लिखित साहित्य में स्थान पाईं, जिससे राजस्थानी भाषा का मानकीकरण हुआ।

भाषा का जन्म बोलचाल से होता है, और राजस्थान में यह प्रक्रिया लोक–कथाओं से जुड़ी रही। उदाहरणस्वरूप, मारवाड़ क्षेत्र की कहावत “कोटड़ा खोले तो राजा, बंद करे तो भगवान” राजपूतों के किलों और युद्धों से निकली। यह बताती है कि कैसे स्थानीय बोली में रची गईं ये उक्तियां भाषा को समृद्ध करती गईं। भाषाविदों का मानना है कि कोई भी भाषा तब परिपक्व होती है जब उसके पास मुहावरे और लोकोक्तियां होती हैं, जो भावों को संक्षिप्त रूप में व्यक्त करें। राजस्थान में पाली, डिंगल और पिंगल जैसी बोलियां कहावतों के बल पर राजस्थानी भाषा बनीं। उदाहरण के लिए, “धरती मां का दूध पियो, तो कभी भूखा न रहियो” जैसी लोकोक्ति ने कृषि–आधारित समाज की भावना को भाषा में बांधा। ये कहावतें केवल शब्द नहीं, बल्कि जीवन दर्शन हैं जो बोली को भाषा का दर्जा दिलाती हैं।

राजस्थान के लोक–जीवन में मुहावरे भाषा के रंग भरते हैं। मुहावरा वह विशेष अभिव्यक्ति है जो शब्दों के शाब्दिक अर्थ से परे जाकर गहन भाव व्यक्त करता है। मेवाड़ के भील समुदाय में प्रचलित ‘आंख का तारा’ मुहावरा मां के पुत्र प्रेम को दर्शाता है। राजस्थानी भाषा के निर्माण में ऐसे मुहावरे महत्वपूर्ण रहे क्योंकि वे बोली की विविधता को एक सूत्र में बांधते हैं। जोधपुर के रेगिस्तानी इलाके में “चने के छोलें में मिर्ची डालना” मुहावरा छोटी बात को बढ़ा–चढ़ाकर पेश करने का प्रतीक है। यह मुहावरा लोक–व्यंग्य से उपजा, जो भाषा को जीवंत बनाता है। इसी तरह, “हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के और” राजपूत शासकों के कूटनीतिक कौशल से जुड़ा। ये मुहावरे बोलियों को एकीकृत करते हुए भाषा को लचीला बनाते हैं। राजस्थान की लोककथाओं में जैसे ढोला–मारू की प्रेम गाथा से निकले मुहावरे ने भाषा को रोमांटिक आयाम दिया।

उपमाएं राजस्थानी भाषा की शोभा बढ़ाती हैं। उपमा वह काव्यात्मक तुलना है जो दो वस्तुओं के समान गुणों को जोड़ती है। उदाहरणस्वरूप, ‘नीलकंठ सा गला’ भगवान शिव की भक्ति से प्रेरित उपमा है, जो राजस्थान के कानड़ों और चारणों की वीर रस की रचनाओं में मिलती है। बोली से भाषा बनते समय उपमाएं भावुकता का पुल बनीं। बीकानेर के शेखावाटी क्षेत्र में ‘रेगिस्तान का ऊंट’ उपमा धैर्य का प्रतीक है। यह बताता है कि कैसे पर्यावरण ने भाषा को आकार दिया। लोकोक्तियां भी उपमाओं से भरी हैं, जैसे “कंगाली का भंवर कभी न भरो” जो गरीबी के चक्र को चित्रित करती है। राजस्थान में उपमाएं लोक–गीतों से भाषा निर्माण में सहायक रहीं। उदाहरण के तौर पर, “चांदनी रात सी गोरी” जैसी उपमा ने राजस्थानी काव्य को समृद्ध किया।

प्राचीन काल में राजस्थान की बोलियां जैसे मारवाडी, मेवाडी, ढूंढाडी और शेखावाटी जैसी स्थानीय बोलियां ही थीं, जो जनमानस की दैनिक जिन्दगी, संघर्षों और विजय गाथाओं को व्यक्त करती रहीं। ये बोलियां धीरे-धीरे परस्पर मेल-जोल से एक समृद्ध भाषा के रूप में विकसित हुईं। इस विकास प्रक्रिया में कहावतें, मुहावरे, उपमाएं और लोकोक्तियां महत्वपूर्ण सहायक बनीं। ये लोक-उक्तियां न केवल भाषा को मजबूत बनाती हैं, बल्कि सामाजिक मूल्यों, नैतिकता और पर्यावरणीय ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करती हैं।

लोकोक्तियां राजस्थान की आत्मा हैं। ये लोक–प्रसिद्ध वाक्य हैं जो सामूहिक बुद्धिमत्ता को प्रतिबिंबित करते हैं। उदाहरणस्वरूप, “अंधे के आगे रोना, भंवरे के आगे तीर चलाना” व्यर्थ प्रयास को दर्शाता है। मारवाड़ी बोली से यह लोकोक्ति राजस्थानी भाषा का अभिन्न अंग बनी। जयपुर के ढूंढाड़ी क्षेत्र में “नोचो तो सोना, दबाओ तो कीचड़” व्यापारियों के लोभ पर व्यंग्य है। ये लोकोक्तियां बोली को भाषा बनाते हुए नैतिक शिक्षा देती हैं। उदयपुर के मेवाड़ में ”राजपूत का खून गंगा की धारा” वीरता की लोकोक्ति है। भाषा विकास में लोकोक्तियां सहायक बनीं क्योंकि वे सरल शब्दों में जटिल सत्य कहती हैं।

कहावतें राजस्थानी भाषा की नींव हैं। कहावत छोटी, सटीक उक्ति है जो अनुभव–आधारित ज्ञान देती है। “एक अनार सौ बीमार” सीमित संसाधनों पर राजस्थान की कहावत है, जो रेगिस्तानी जीवन से उपजी। जोधपुर में “काम करो तो कांटा, न करो तो कांटा” मेहनत का संदेश देती है। ये कहावतें बोलियों को एकत्रित कर भाषा बनीं। उदाहरणस्वरूप, “घर की मुर्गी दाल बराबर” घरेलू मूल्य को कम आंकने पर चेतावनी है। राजस्थान के लोक–नृत्यों जैसे घूमर में ये कहावतें गाई जाती रहीं, जो भाषा को लोकप्रिय बनाती गईं।

राजस्थान में भाषा निर्माण की प्रक्रिया लोक–साहित्य से जुड़ी। 19वीं सदी तक बोलियां प्रमुख थीं, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम में चंदबरदाई के पिंगल भाषा और मीरा के भक्ति गीतों ने राजस्थानी को भाषा का स्वरूप दिया। कहावतें जैसे “सांप निकल गया, लकीर पीट रहे हो” ने व्यावहारिकता सिखाई। जालौर के सोनगरा राजपूतों की “खून का रंग पानी में न बदले” कहावत वीरता का प्रतीक बनी। मुहावरे जैसे ‘नाक रगड़ना’ क्षमा मांगने को दर्शाते हैं। उपमाएं “काला बादल सा मन” उदासी व्यक्त करती हैं। लोकोक्तियां “भेड़ चराने वाले को भेड़िया न समझो” धोखे की चेतावनी देती हैं।

आधुनिक राजस्थान में ये तत्व भाषा को जीवित रखते हैं। उदाहरणस्वरूप, कोटा के हाड़ौती क्षेत्र में “पानी रे भाग्य, रोटी रे भाग्य” कहावत आज भी प्रासंगिक है। मुहावरे ‘आंखें फेरना’ अनदेखा करने को कहते हैं। उपमाएं ‘शेरनी सा साहस’ महिलाओं की शक्ति दिखाती हैं। लोकोक्तियां “एक हाथ से ताली न बजे” सहयोग पर जोर देती हैं। कहावतें “धीरे–धीरे रे मांया, घना–घना रे आया” धैर्य सिखाती हैं। ये सभी राजस्थानी भाषा को समृद्ध करते हैं।

राजस्थान की सांस्कृतिक आयोजन जैसे मल्लिनाथ मेला या तेजाजी महोत्सव में ये उक्तियां गूंजती हैं। भाषा विद्वान कवि हरिभाऊ उपाध्याय ने अपनी रचनाओं में इन्हें स्थान दिया। “बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद” अज्ञानी की कहावत आज सोशल मीडिया पर प्रचलित है। मुहावरे ”चौपट राजा रंक” गरीबी दर्शाते हैं। उपमाएं ‘सूरज सा तेज’ उज्ज्वलता कहती हैं। लोकोक्तियां “नाच न जाने आनंद भयो” अज्ञानता पर व्यंग्य करती हैं।

भाषा निर्माण में इनका योगदान अमूल्य है। राजस्थान सरकार ने भी राजस्थानी को मान्यता दी, जिसमें ये तत्व प्रमुख हैं। उदाहरणस्वरूप, ‘कुंए का मेंढक’ सीमित दृष्टि वाली कहावत शिक्षा सुधार में उपयोगी। मुहावरे “दांतों तले उंगली दबाना” आश्चर्य व्यक्त करते हैं। उपमाएं “बिजली सा प्रहार” शक्ति दिखाती हैं। लोकोक्तियां “अंध भक्ति कभी न करो” चेतावनी देती हैं।

राजस्थान के युवा इनसे प्रेरणा लेते हैं। जोधपुर विश्वविद्यालय में अध्ययन से पता चलता है कि 80 प्रतिशत राजस्थानी कहावतें मौखिक परंपरा से आईं। “चोर–चोर मौसेरे भाई” भ्रष्टाचार पर लोकोक्ति है। मुहावरे “सिर मुड़ाते ही ओले पड़े” विपत्ति कहते हैं। उपमाएं ‘हाथी का पैर’ विशालता दर्शाती हैं। कहावतें “जैसी करनी वैसी भरनी” कर्मफल सिखाती हैं।

इन उक्तियों ने राजस्थानी को वैश्विक पहचान दी। उदाहरणस्वरूप, ‘नमक हराम’ विश्वासघात का मुहावरा बॉलीवुड तक पहुंचा। उपमाएं “रेगिस्तान का किला” दृढ़ता कहती हैं। लोकोक्तियां “भूखे भजन न होए गोपाला” भौतिकता पर जोर देती हैं। भाषा का विकास जारी है, जहां ये तत्व सहायक बने रहेंगे। राजस्थान की यह धरोहर आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगी।

–अतिथि सम्पादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

प्रधानमंत्री जी के नाम खुला पत्र

राजेन्द्र भाणावत

आदरणीय प्रधानमंत्री जी,

यह पत्र मैं आपको उन 22 लाख विद्यार्थियों की भावनाओं से अवगत कराने के लिए लिख रहा हूं जिन्होंने 3 मई, 2026 को NEET की परीक्षा दी थी ताकि NEET मेडिकल कॉलेज में प्रवेश लेकर डॉक्टर बन सकें। यह सपना केवल हमारा नहीं था अपितु हमारे पूरे परिवार का था। हममें से कई के माता–पिता ने हमारी इस परीक्षा के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया था। कुछ ने अपने जेवर बेचे, तो कई ने अपनी खेती की ज़मीन। कई ने दोगुनी मेहनत करके हमारी कोचिंग की फीस का इंतज़ाम किया। छोटे गांवों से पास के शहरों में छोटी सी खोली में रहकर पिछले दो साल से हम प्रतिदिन 12–15 घंटे पढ़ाई कर रहे थे, ताकि NEET में अच्छे नंबर लाकर किसी सरकारी कॉलेज में दाखिला ले सकें।

इन सब सपनों और मेहनत पर पानी फिर गया जब 12 मई को यह पता चला कि NEET की परीक्षा पेपर लीक होने के कारण निरस्त कर दी गई है। यह वज्रपात केवल हम 22 लाख विद्यार्थियों पर ही नहीं अपितु 22 लाख परिवार यानी लगभग डेढ़ करोड़ लोगों पर हुआ है।

यह आघात इतना बड़ा है कि हमारे कई साथी मानसिक अवसाद में चले गए हैं और इस आशंका से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि उनमें कोई आत्मघाती कदम नहीं उठा ले। हम अभी तक यह नहीं समझ पा रहे हैं कि भारत सरकार और NTA एक परीक्षा निर्विघ्न रूप से क्यों नहीं करा पाती? आपको पता ही है कि 2024 में भी पेपर लीक हुआ था लेकिन सर्वोच्च न्यायालय के दखल के कारण परीक्षा निरस्त नहीं की गई। उस पेपर लीक के दोषियों में से किस को क्या सजा मिली, किसी को नहीं पता। जब लाखों विद्यार्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने वालों पर कोई सख्त कार्यवाही होकर सजा नहीं होती है, तो इनका हौंसला बढ़ जाता है। विडंबना है कि जो सज्जन 2024 में NTA की गवर्निंग काउंसिल के अध्यक्ष थे, वही अब तक अपने पद पर बने हुए हैं।

आदरणीय प्रधानमंत्री जी,

हमें तो यह लगता है कि कहीं कोचिंग माफिया ने पूरे तंत्र पर तो कब्जा नहीं कर लिया है? कुल कितना पैसा केवल NEET की कोचिंग हेतु वसूला जाता है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि एक विद्यार्थी लगभग 2 लाख रुपए तक खर्च करता है और यदि 15 लाख ने भी कोचिंग की हो, तो यह राशि लगभग 30000 करोड़ रुपए होती है। यह पैसा किस स्तर तक और किस–किस के पास पहुंचता है, इस बारे में भी कई चर्चाएं हो रही हैं।

यदि हम यह सोचें कि सरकार के निर्णय भी यही कोचिंग। माफिया प्रभावित कर रहा है, तो गलत नहीं होगा।

आप को एक और बात कहनी है। तीन–चार दशक पूर्व बोर्ड की परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर किसी भी इंजीनियरिंग या मेडिकल कॉलेज में प्रवेश सीधे ही मिल सकता था, तो अब वापस ऐसा क्यों नहीं किया जा सकता? केवल सरकार की दृढ़ इच्छा शक्ति चाहिए। यह और किसी के लिए संभव न भी हो, तो आप तो ऐसा कर ही सकते हैं। आपने ही तो कहा था– “मोदी है तो मुमकिन है”। क्या आपकी सरकार एक परीक्षा भी बिना पेपर लीक हुए नहीं करा सकती? यदि यही हाल रहा तो हम यह कहने पर बाध्य हो जाएंगे “मोदी है तो मुश्किल है”। इससे सारा कोचिंग माफिया एक बार में ही ध्वस्त हो जाएगा। इससे डम्मी स्कूल भी समाप्त हो जाएंगे। स्कूल पुनः अपना खोया हुआ गौरव प्राप्त करेंगे और विद्यार्थी प्रतिदिन विद्यालय जाएंगे। बोर्ड की परीक्षाओं का स्तर आवश्यकतानुसार सुधारा जा सकता है।

आदरणीय प्रधानमंत्री जी,

आशा है हम दुःखी विद्यार्थियों की व्यथा को समझ कर, अपनी चिर परिचित संवेदनशीलता का परिचय देते हुए आप निम्न कदम उठाएंगेः–

1. आप शीघ्र राष्ट्र के नाम संबोधन दें जिससे विद्यार्थी आश्वस्त हो सकें कि भविष्य में ऐसा नहीं होगा
2. तत्काल शिक्षा मंत्री को अपने पद से मुक्त करें
3. NTA के DG को निलंबित करें
4. गत पेपर लीक के दोषियों पर क्या कार्यवाही हुई, इससे देश को अवगत कराएं
5. बोर्ड की परीक्षा के प्राप्तांक के आधार पर तकनीकी और मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश दें

हम सब आपके टीवी पर संबोधन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सादर,
राजेन्द्र भाणावत, पूर्व आई ए एस
(22 लाख NEET विद्यार्थियों की ओर से)

त्रिभाषा फ़ार्मूला और राजस्थानी

राजेन्द्र जोशी

यह सर्वविदित है कि उच्च प्राथमिक शिक्षा तक के बच्चे मातृभाषा में तेजी से सीखते हैं और समझ लेते हैं। मातृभाषा जो कि घर में और स्थानीय समुदाय द्वारा भी बोली जाती है। परिवारों में और समुदाय में यह सबसे प्रभावी और सार्थक भाषा के रूप में स्वीकार की जाती है।भाषा विज्ञानियों और अनुभव से यह भी स्पष्ट हुआ है कि कक्षा आठ तक मातृभाषा में पढ़ाई होती हो तो आगे की कक्षाओं में वह विद्यार्थी निपुण होगा।

भाषा और बोली के फर्क को समझना होगा। हम जब लिखते हैं तो ऐसे में भाषा की एकरूपता का ध्यान रखकर हम एक जैसी भाषा लिखते हैं। बोली वह होती है जो समुदाय में और घर में बोली जाती है। किसी बोली में अगर लिखा जाता है और उसे पढ़ाया जाता है तो उसमें अस्पष्टता बनी रहेगी, जबकि भाषा में लिखे हुए में पढ़ते समय स्पष्टता और ग्राह्यता रहेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी स्पष्ट कहती है कि उच्च प्राथमिक शिक्षा तक का माध्यम मातृभाषा, स्थानीय भाषा, क्षेत्रीय भाषा होगी। स्थानीय भाषा को, जहां भी संभव हो, भाषा के रूप में पढाया जाता रहेगा।

यहां स्पष्ट है कि पढ़ाई का माध्यम भाषा ही होगी। बोली नहीं होगी। हालांकि नई शिक्षा नीति 2020 को घोषित हुए छह वर्ष बीतने को है, परंतु मातृभाषा में पढ़ाई का मार्ग अभी बन नहीं पाया है।

मातृभाषाओं के लिए यह उजला पक्ष कह सकते हैं कि केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) के स्कूलों में छठवीं कक्षा से तीसरी भाषा को अनिवार्य कर दिया गया है। और जब सीबीएसई ने अनिवार्य कर दिया तो राज्य सरकार भी निश्चित रूप से इसे अनिवार्य करेगी। लेकिन संकट यह है कि राजस्थान में तीसरी भाषा के रूप में ही सही, राजस्थानी भाषा–साहित्य का मॉडल लागू किया जाना चाहिए। बार–बार नई शिक्षा नीति और त्रिभाषा मॉडल में यह कहा जा रहा है कि संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित भाषाएं इसमें शामिल की जा रही है।

माना कि भारत सरकार ने अभी तक राजस्थानी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किया है किंतु त्रिभाषा मॉडल में राजस्थानी को भी शामिल किया जाना मैं जरूरी मानता हूं। यह इसलिए जरूरी है क्योंकि राजस्थान के विश्वविद्यालयों एवं सेकेंडरी विद्यालयों में राजस्थानी भाषा वर्षों से पढाई जाती रही है। वहां राजस्थानी भाषा और साहित्य का पाठ्यक्रम है। विश्वविद्यालयों और विद्यालयों में में जहां यह पढ़ाई जा रही वहां वह राजस्थानी भाषा में है, न कि राजस्थानी भाषा की बोलियों में। जबकि उच्च प्राथमिक शिक्षा तक के लिए कहा जा रहा है कि राजस्थानी भाषा की बनिस्पत, स्थानीय बोलियां में अलग–अलग जगह पुस्तकें तैयार की जाएं और उन्हें तीसरी भाषा के रूप में स्वीकार की जाए।

उच्च शिक्षा तक स्थानीय बोलियों में पुस्तकें तैयार करने से राजथानी भाषा कमजोर होगी, हमारी राजस्थानी संस्कृति कमजोर होगी। बोलियाँ हरेक भाषा में होती हैं और वे भाषा को समृद्ध करती हैं। हिंदी भाषा में भी कई बोलियां शामिल है और राजस्थानी भाषा में भी किंतु जब विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है तब वह बोलियों में नहीं, भाषा में तैयार किया जाता है। भाषा की एकरूपता का ध्यान रखा जाता है। राजस्थानी भाषा प्राचीन भाषा है और इसका साहित्य इतना विशाल और समृद्ध है कि अन्य भाषाओं से इसकी तुलना की जाए तो इसकी कोई भी भाषा बराबरी नहीं कर सकती। राजस्थानी साहित्य में दर्शन, व्याकरण, संगीत, चिकित्सा, वास्तुकला, धातु विज्ञान, नाटक, कविता, कहानी और बहुत कुछ है, जिन्हें भारतीय ज्ञान अनुशासनों के रूप में जाना जाता है। इन सबको राजस्थान के विभिन्न धर्मों के लोगों और जीवन के सभी क्षेत्रों और सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के लोगों द्वारा हजारों वर्षों में लिखा गया है।

भारत सरकार राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल न करे तो राजस्थान सरकार के पास दूसरी राजभाषा बनाने का विकल्प उपलब्ध है। सरकार क्षेत्रीय आधार पर बोली को भाषा बनाकर राजस्थानी भाषा–साहित्य को कमजोर कर मान्यता आंदोलन को खत्म करने का प्रयास न करे।

इसलिए राजस्थानी भाषा को त्रिभाषा के मुख्य धारा विकल्प के साथ स्कूल और उच्चतर शिक्षा के सभी स्तरों पर विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण समृद्ध विकल्प के रूप में पेश किया जाना चाहिए।

त्रिभाषा फार्मूले में कक्षा आठ तक राजस्थानी भाषा का चयन किया जाना चाहिए अथवा राजस्थानी भाषा को अनिवार्य भाषा के रूप में लागू करने का विकल्प होना चाहिए, जिससे नई शिक्षा नीति की सोच और परिकल्पना पूरी होगी। क्षेत्रीय भाषाओं का सम्मान करते हुए उच्च प्राथमिक शिक्षा तक शिक्षा का माध्यम राजस्थानी हो। यह भी संभव हो सकता है कि दो भारतीय भाषाओं में हिंदी के साथ राजस्थानी को रखा जाए।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद–साहित्यकार

ईरान–अमेरिका तनाव, बढ़ती महंगाई और आम आदमी की चिंता

राम शर्मा

विश्व राजनीति में जब भी युद्ध या तनाव बढ़ता है, उसका असर केवल सीमाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था पर दिखाई देता है। वर्तमान समय में ईरान और अमेरिका के बीच बढ़ते तनाव ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों को प्रभावित किया है। भारत जैसे विकासशील देश, जो अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए बड़े पैमाने पर आयातित तेल पर निर्भर हैं, ऐसे संकटों से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। इसका सीधा असर पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस की कीमतों पर पड़ता है, जिससे महंगाई तेजी से बढ़ती है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नागरिकों से पेट्रोल और गैस के कम इस्तेमाल तथा ऊर्जा बचत की अपील की है।

भारत दुनिया के सबसे बडे तेल आयातक देशों में से एक है। देश अपनी जरूरत का अधिकांश कच्चा तेल विदेशों से खरीदता है। जब मध्य–पूर्व में युद्ध जैसी स्थिति बनती है, तब तेल उत्पादक देशों में अस्थिरता बढती है और अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल महंगा हो जाता है। तेल की कीमत बढ़ने का असर केवल वाहन चलाने वालों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि परिवहन, उद्योग, खेती और रोजमर्रा की वस्तुओं की लागत भी बढ जाती है। यही वजह है कि महंगाई आम आदमी के जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करती है।

आज आम नागरिक पहले ही बेरोजगारी, सीमित आय और बढ़ते खर्चों से जूझ रहा है। ऐसे समय में पेट्रोल और गैस की कीमतों में वृद्धि उसके घरेलू बजट को पूरी तरह बिगाड़ देती है। मध्यम वर्ग और गरीब परिवारों के लिए रसोई गैस सिलेंडर भरवाना कठिन होता जा रहा है। शहरों में काम पर जाने वाले लोग अब निजी वाहनों के बजाय सार्वजनिक परिवहन का सहारा लेने को मजबूर हैं। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में डीजल महंगा होने से खेती की लागत बढ़ गई है। ट्रैक्टर, सिंचाई पंप और माल ढुलाई पर अधिक खर्च किसानों की कमर तोड़ रहा है।

महंगाई का सबसे गंभीर प्रभाव खाद्य पदार्थों पर दिखाई देता है। परिवहन खर्च बढ़ने से सब्जियां, फल, दूध और अनाज बाजार तक महंगे दामों में पहुंचते हैं। दुकानदार भी अपनी लागत बढ़ने का हवाला देकर कीमतें बढ़ा देते हैं। परिणामस्वरूप गरीब और निम्न मध्यम वर्ग के लोगों के लिए दो समय का भोजन जुटाना भी कठिन होने लगता है। एक मजदूर या छोटा कर्मचारी जिसकी आय सीमित है, वह हर महीने बढ़ती कीमतों के सामने असहाय महसूस करता है।

महंगाई केवल आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और मानसिक तनाव का भी कारण बनती है। जब परिवार की आय और खर्च में संतुलन नहीं बनता, तब घरेलू कलह, तनाव और असुरक्षा बढ़ने लगती है। बच्चों की पढ़ाई, स्वास्थ्य और अन्य आवश्यक जरूरतों पर असर पड़ता है। कई परिवार अपनी बचत खत्म करने को मजबूर हो जाते हैं। गरीब तबका कर्ज लेने की स्थिति में पहुंच जाता है। इस प्रकार महंगाई समाज में असमानता को और अधिक बढ़ाती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा पेट्रोल और गैस के कम इस्तेमाल की अपील एक महत्वपूर्ण संदेश है। ऊर्जा संरक्षण आज केवल आर्थिक आवश्यकता नहीं, बल्कि राष्ट्रीय जिम्मेदारी भी बन गया है। यदि नागरिक आवश्यकता के अनुसार ईंधन का उपयोग करें, सार्वजनिक परिवहन को अपनाएं और बिजली की बचत करें, तो काफी हद तक दबाव कम किया जा सकता है। हालांकि केवल जनता से अपील करना पर्याप्त नहीं होगा। सरकार को भी महंगाई नियंत्रित करने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे।

सरकार को वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों पर अधिक ध्यान देना चाहिए। सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन और जैव ईंधन जैसे विकल्प भविष्य में भारत को तेल पर निर्भरता कम करने में मदद कर सकते हैं। इसके अलावा सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को मजबूत करना भी जरूरी है ताकि लोग निजी वाहनों पर कम निर्भर रहें। गरीब और मध्यम वर्ग को राहत देने के लिए सरकार को गैस सब्सिडी, खाद्य सुरक्षा योजनाओं और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने की दिशा में भी काम करना चाहिए।

इसके साथ ही बाजार में जमाखोरी और कालाबाजारी पर कठोर नियंत्रण आवश्यक है। अक्सर संकट के समय कुछ व्यापारी कृत्रिम कमी पैदा कर वस्तुओं के दाम बढ़ा देते हैं। इससे आम जनता की परेशानी और बढ़ जाती है। प्रशासन को सख्ती से निगरानी रखनी चाहिए ताकि आवश्यक वस्तुएं उचित मूल्य पर उपलब्ध रहें।

आज आवश्यकता इस बात की है कि देश आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़े। यदि भारत ऊर्जा, कृषि और उद्योग के क्षेत्र में अधिक आत्मनिर्भर बनेगा, तो वैश्विक संकटों का असर अपेक्षाकृत कम होगा। नागरिकों को भी अपनी जीवनशैली में संयम और बचत की आदत विकसित करनी होगी।

ईरान–अमेरिका तनाव ने एक बार फिर यह साबित किया है कि वैश्विक घटनाएं सीधे आम आदमी के जीवन को प्रभावित करती हैं। महंगाई का बोझ सबसे अधिक उस व्यक्ति पर पड़ता है जिसकी आय सीमित होती है। इसलिए सरकार, उद्योग और नागरिक – सभी को मिलकर जिम्मेदारी निभानी होगी। ऊर्जा बचत, वैकल्पिक संसाधनों का उपयोग और आर्थिक अनुशासन ही इस संकट से निकलने का सबसे प्रभावी रास्ता हो सकता है।

–राम शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

उदयपुर में लू व एसी की हवा ने बढ़ाई आंखों की बीमारी

उदयपुर (का.स.)। उदयपुर में चिलचिलाती धूप और 43 डिग्री टेम्प्रेचर ने लोगों की मुश्किली बढ़ा दी हैं। तेज गर्मी के कारण आंखों में ड्राईनेस, जलन और एलर्जी की शिकायतें तेजी से बढ़ रही हैं। इसका असर सरकारी और निजी अस्पतालों की ओपीडी में साफ नजर आ रहा है जहां मरीजों की संख्या अचानक दुगुनी हो गई है।संभाग के सबसे बड़े एमबी हॉस्पिटल में ओपीडी का आंकड़ा करीब 200 पहुंच गया है। चिकित्सकोके अनुसार पिछले कुछ दिनों में आंखों की एलर्जी और ड्राईनेस के मामलों में लगभग 20 प्रतिशत तक बढ़ोतरी दर्ज की गई है। सहायक आचार्य डॉ. अनुश्री शर्मा ने बताया कि भीषण गर्मी से बचने के लिए लोग लगातार एसी (एयर कंडीशनर) में रह रहे हैं। एसी की ठंडी हवा आंखों की नमी को सोख लेती है, जिससे आंखों में सूखापन आने लगता है। गर्म हवाएं और लू भी चल रही है, ऐसे में दो–पहिया वाहन चलाने वाले लोग जब बिना चश्मे के बाहर निकलते हैं तो गर्म हवा सीधे आंखों से टकराती है जिससे जलन होती है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 14 मई, 2026

प्रथम ज्येष्ठ मास (शुद्ध), कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2083, रेवती नक्षत्र रात्रि 10:34 तक, प्रीति योग सायं 5:5 तक, तैतिल करण दिन 11:21 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 10:34 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–मेष, चन्द्रमा–मीन, मंगल–मेष, बुध–मेष, गुरू–मिथुन, शुक्र–वृष, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। आज बुध वृष राशि में रात्रि 12:31 पर प्रवेश करेगा। शुभ मिथुन राशि में दिन 10:53 पर प्रवेश करेगा। आज प्रदोष व्रत, मधुसुदन द्वादशी है। आज से वट सावित्री व्रत तीन दिन के लिए आरम्भ होंगे। पंचक रात्रि 10:34 पर समाप्त होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 7:24 तक, चर 10:45 से 12:23 तक, लाभ–अमृत 12:23 से 3:41 तक, शुभ 5:23 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:44, सूर्यास्त 7:02

मेष
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

तुला
विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। अस्त–व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

धनु
घर–परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना बन सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। घर–परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।